

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189



आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में सामाजिक समर्थन की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE



Authors

डॉ. राजेश्वरी गर्ग

सहायक प्राध्यापक

पुष्पलता भगत

शोधार्थी

शिक्षा विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारतीय संदर्भ में आदिवासी (जनजातीय) समुदायों की शैक्षिक प्रगति केवल नामांकन और उत्तीर्णता तक सीमित नहीं है; 21वीं सदी में सफलता के लिए आवश्यक जीवन कौशल—जैसे आत्म-नियमन, संप्रेषण, निर्णय-निर्माण, समस्या-समाधान, सहानुभूति, डिजिटल साक्षरता और तनाव प्रबंधन का विकास उतना ही जरूरी है। प्रस्तुत लेख में जीवन कौशल की अवधारणा, सामाजिक समर्थन के आयाम (परिवार, शिक्षक-विद्यालय, सहपाठी, समुदाय/परंपरा, संस्थागत-नीतिगत और डिजिटल), तथा इनके माध्यम से जीवन कौशल के विकास की प्रक्रियाएँ—प्रेरक, संज्ञानात्मक-भावनात्मक, संसाधनात्मक और सांस्कृतिक चर्चा की गई है। प्रस्तुत लेख ब्रॉफेनब्रेनर के पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत, विगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम, बैंडुरा के आत्म-प्रभावकारिता सिद्धांत और सामाजिक पूंजी के ढाँचे के आधार पर एक वैचारिक मॉडल प्रस्तावित करता है, जो बताता है कि बहु-स्तरीय सामाजिक समर्थन जीवन कौशल की प्राप्ति, अभ्यास और स्थायित्व को कैसे संभव बनाता है। भारतीय नीतिगत और कार्यक्रमगत पहल, नई

शिक्षा नीति (2020), एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल (EMRS), समावेशी-बहुभाषी शिक्षा, और जीवन-कौशल कार्यक्रमोंका संदर्भ लेते हुए, लेख शैक्षिक हस्तक्षेपों, शिक्षक-प्रशिक्षण, समुदाय-विद्यालय साझेदारी, भाषा-संवेदनशीलता, और संदर्भ-उपयुक्त आकलन के लिए ठोस सुझाव देता है। अंततः, लेख भविष्य-शोध के लिए मिश्रित-पद्धति (Mixed Methods) दृष्टिकोण, अनुदैर्घ्य अध्ययन, और संस्कृति-संवेदी उपकरण-विकास पर बल देता है।

मुख्य शब्द

आदिवासी शिक्षा, जीवन कौशल, सामाजिक समर्थन, आत्म-प्रभावकारिता, बहुभाषी शिक्षा, NEP 2020.

प्रस्तावना

भारत में जनजातीय समुदाय देश की कुल जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिनकी भागीदारी 2011 की जनगणना के अनुसार 8.6 प्रतिशत है (भारत सरकार, 2011)। इन समुदायों के समग्र विकास के लिए शिक्षा को एक केंद्रीय तत्व माना गया है, जो ज्ञान के प्रसार के माध्यम से आंतरिक शक्ति प्रदान करती है और उन्हें शोषण एवं गरीबी से मुक्ति दिलाने में सहायक होती है। हालांकि, आदिवासी शिक्षा के क्षेत्र में कई संरचनात्मक और

सामाजिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जो उनके शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास को बाधित करती हैं (सक्सेना, 2013)। इसी संदर्भ में, जीवन कौशल का विकास और उसे सहारा देने वाली सामाजिक समर्थन प्रणालियों की भूमिका पर गहन विश्लेषण आवश्यक हो जाता है।

जीवन कौशल को व्यक्तिगत और पेशेवर मामलों को समुचित तथा जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक व्यवहारों के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया गया है। ये कौशल दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं और प्रश्नों को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए महत्वपूर्ण हैं, और युवाओं को अपने समुदायों में रचनात्मक रूप से भाग लेने, स्वस्थ संबंध स्थापित करने और आत्म-जागरूकता विकसित करने के लिए सशक्त बनाते हैं (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 1994)। दूसरी ओर, सामाजिक समर्थन एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र है जो किसी व्यक्ति या समूह को चुनौतीपूर्ण समय में सहयोग और सहायता प्रदान करता है। यह किसी भी व्यक्ति के जीवन को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, खासकर कमजोर और वंचित समूहों के लिए।

भारत के आदिवासी समुदाय सांस्कृतिक विविधता, परंपरागत ज्ञान और प्रकृति-केंद्रित जीवन-शैली के लिए विख्यात हैं। फिर भी ऐतिहासिक व संरचनात्मक कारणों से उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ औसत से पीछे रही हैं। आज जब शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक उपलब्धि नहीं बल्कि जीवन के लिए शिक्षा है, तब जीवन कौशल (Life Skills) का विकास—जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने परिभाषित किया है— बच्चों और किशोरों के लिए अनिवार्य माना जाता है। आदिवासी विद्यार्थियों के लिए यह और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके सीखने के स्थानीय-सांस्कृतिक संदर्भ, भाषाई विविधता और संसाधन-सहजता जीवन कौशल को स्वाभाविक रूप से विकसित करने के अवसर भी देती है और चुनौतियाँ भी उपस्थित करती है।

वैचारिक रूपरेखा: जीवन कौशल व सामाजिक समर्थन

जीवन कौशल की अवधारणा

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), यूनिसेफ (UNICEF) तथा एनसीईआरटी (NCERT) के अनुसार जीवन कौशल ऐसे अनुकूलनशील एवं सकारात्मक व्यवहारकौशल हैं, जो किसी व्यक्ति को दैनिक जीवन की माँगों एवं चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाते हैं (WHO, 1997; NCERT, 2015)। जीवन कौशल का दायरा व्यापक है, जिसमें संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत, सामाजिक-भावनात्मक तथा डिजिटल और नागरिकता से जुड़े कौशल सम्मिलित हैं। संज्ञानात्मक कौशलों में समस्या-समाधान, निर्णय-निर्माण, आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिंतन प्रमुख हैं, जो विद्यार्थियों को तर्कसंगत एवं सृजनात्मक सोच विकसित करने में मदद करते हैं। व्यक्तिगत अथवा आत्म-प्रबंधन संबंधी कौशल जैसे – आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, तनाव एवं क्रोध प्रबंधन, लक्ष्य-निर्धारण और समय-प्रबंधन व्यक्ति को अपने जीवन को संतुलित एवं उत्पादक बनाने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार, सामाजिक-भावनात्मक कौशल, संप्रेषण, सहानुभूति, समूह-कार्य, संघर्ष-समाधान और नेतृत्व व्यक्ति को दूसरों के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित करने और सहयोगात्मक व्यवहार सीखने में मदद करते हैं। अंततः, डिजिटल एवं नागरिकता कौशल व्यक्ति को सुरक्षित, उत्तरदायी डिजिटल व्यवहार, सूचनात्मक साक्षरता तथा पर्यावरण-अनुकूलता सम्बन्धी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं (UNICEF, 2012)।

सामाजिक समर्थन के आयाम

आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में विविध प्रकार का सामाजिक समर्थन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसे— पारिवारिक समर्थन, भावनात्मक स्वीकृति, अध्ययन-अनुकूल वातावरण, मातृभाषा में संवाद और प्रेरणा प्रदान करना (NEP, 2020, Kumar -Mishra, 2021)। शिक्षक-विद्यालय समर्थन, समावेशी कक्षा-प्रबंधन, बहुभाषी शिक्षण, सह-अध्ययन, परामर्श और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करता है (Sharma, 2020)। सहपाठी समर्थन, समूह-अधिगम, समकक्ष सलाह, सहयोगी परियोजनाएँ और खेल-आधारित सीख से कौशल विकसित होता है। समुदाय और परंपरा स्थानीय कला, लोककथा और पर्यावरणीय ज्ञान के माध्यम से आत्म-सम्मान को बढ़ाते हैं (Verma & Singh, 2019, 2018)। संस्थागत-नीतिगत समर्थन छात्रवृत्तियाँ, आवासीय विद्यालय और बहुभाषी दृष्टि

से अवसर उपलब्ध कराता है, जबकि डिजिटल/नेटवर्क समर्थन ICT और मोबाइल-आधारित संसाधनों से वर्तमान परिदृश्य की सीख देता है (Patel, 2022)।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि और प्रमुख अवधारणाएँ

जीवन कौशल: परिभाषा और घटक

जीवन कौशल वे मूल क्षमताएँ हैं जिनका उपयोग व्यक्ति अपने दैनिक, व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में चुनौतियों और समस्याओं का सामना करने के लिए करता है। ये मानसिक दक्षताएँ और अंतर्व्यक्तिक कौशल का एक समुच्चय हैं, जो व्यक्ति को प्रभावी निर्णय लेने, समस्याओं को सुलझाने, रचनात्मक और आलोचनात्मक रूप से सोचने तथा स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने में सहायता करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा प्रस्तावित जीवन कौशल के प्रमुख घटकों को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- चिंतन कौशल:** इसमें आलोचनात्मक सोच और रचनात्मक सोच, निर्णय लेने की क्षमता और समस्या-समाधान शामिल है। शोध अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि आदिवासी किशोरों में चिंतन कौशल का स्तर निम्न पाया गया है, जो इस क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता को दर्शाता है।
- सामाजिक कौशल:** इसके अंतर्गत प्रभावी संचार, पारस्परिक संबंध कौशल, और दूसरों के सशक्तिकरण के लिए नेतृत्व संबंधी अच्छा व्यवहार अपनाना आता है। शोध के अनुसार, आदिवासी किशोरों में सामाजिक कौशल का स्तर औसत पाया गया है।
- भावनात्मक कौशल:** इसमें आत्म-जागरूकता, दूसरों के प्रति सहानुभूति और तनाव व भावनाओं का प्रभावी प्रबंधन शामिल है। अध्ययन दर्शाते हैं कि आदिवासी किशोरों में भावनात्मक कौशल का स्तर भी औसत पाया गया है।

यह वर्गीकरण इस बात पर प्रकाश डालता है कि जीवन कौशल एक व्यापक ढाँचा है जो व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी दोनों पहलुओं को सशक्त बनाता है। आदिवासी विद्यार्थियों के संदर्भ में, जहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन कौशलों का विकास विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

सामाजिक समर्थन: परिभाषा और प्रकार

सामाजिक समर्थन एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र है जो किसी व्यक्ति को कठिन समय में आवश्यक सहयोग और संसाधन प्रदान करता है। यह सहायता भावनात्मक, भौतिक, सूचनात्मक या नेटवर्क-आधारित हो सकती है। आदिवासी समाज में, सामुहिकता (collectivism) और सामुदायिक भावना (communalism) का अत्यधिक महत्व है, जहाँ समुदाय के सदस्य एक-दूसरे के साथी और सहयोगी होते हैं। यह एक स्वाभाविक और पारंपरिक सामाजिक समर्थन प्रणाली का आधार है। यह सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना यह सुनिश्चित करती है कि जीवन के मुद्दों का समाधान मिलकर किया जाए, जिससे एक सामूहिक समरसता और सहयोग की भावना बनी रहती है। इस प्रकार, सामाजिक समर्थन जीवन के चुनौतीपूर्ण पहलुओं में युवा लोगों को सशक्त बनाने का एक साधन है। यह आलेख इन पारंपरिक संरचनाओं को आधुनिक चुनौतियों का सामना करने के लिए कैसे अनुकूलित किया जा सकता है, इसका गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

आदिवासी शिक्षा की चुनौतियाँ: सामाजिक समर्थन की आवश्यकता

भारत में आदिवासी विद्यार्थियों के सामने उपस्थित चुनौतियाँ बहुआयामी हैं, जो केवल शैक्षिक उपलब्धियों या आर्थिक संसाधनों की कमी तक सीमित नहीं रहतीं। भौगोलिक दूरी और अविकसित आधारभूत संरचना के कारण आदिवासी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच अभी भी सीमित है (भारत सरकार, 2019)। भाषा संबंधी अवरोध और विद्यालयों में सांस्कृतिक असंवेदनशीलता विद्यार्थियों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है (पांडा, एस. 2018)। सामाजिक-पारिवारिक अपेक्षाएँ और पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी होने की स्थिति में आत्मविश्वास की कमी तथा विद्यालय में अनुकूलन की कठिनाई स्पष्ट रूप से देखी जाती है (क्षत्रिय, वी, 2005)। इसके अतिरिक्त, डिजिटल विभाजन और

अवसरों की असमान पहुँच आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को और अधिक कठिन बना देती है (UNESCO, 2020)। समाज में व्याप्त पूर्वाग्रह और भेदभाव उनके आत्म-अभिव्यक्ति एवं आत्म-सम्मान को प्रभावित करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी विद्यार्थियों के लिए सामाजिक समर्थन अत्यंत आवश्यक है (कुमार, आर., 2017)।

शैक्षणिक और आर्थिक चुनौतियाँ

आंकड़ों के अनुसार, 2011 की जनगणना में भारत की औसत साक्षरता दर 73 प्रतिशत थी, जबकि आदिवासी समुदाय की साक्षरता दर 59 प्रतिशत थी। यह 14 प्रतिशत का अंतर एक महत्वपूर्ण विकासात्मक खाई को दर्शाता है। शिक्षा से संबंधित नीतियों और योजनाओं के बावजूद, आदिवासी बच्चों में ड्रॉपआउट दर चिंताजनक है। प्राथमिक स्तर पर यह दर 37 प्रतिशत, माध्यमिक पर 55 प्रतिशत, और उच्च माध्यमिक पर 70 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। यह दर अन्य समुदायों की तुलना में काफी अधिक है, जो शिक्षा प्रणाली के प्रति उनके असंतुलित जुड़ाव को दर्शाता है।

आर्थिक कठिनाइयाँ भी एक प्रमुख कारक हैं। कई आदिवासी परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं। इसके कारण, स्कूल की फीस, वर्दी और किताबों जैसे शैक्षिक खर्चों को वहन करना उनके लिए बेहद मुश्किल होता है। बच्चों को स्कूल भेजने की अवसर लागत (Opportunity Cost) भी बहुत अधिक होती है, क्योंकि वे परिवार की आय में मजदूरी या अन्य श्रम के माध्यम से योगदान करते हैं। ऐसे में, परिवार अक्सर दीर्घकालिक शैक्षिक निवेश के बजाय तात्कालिक उत्तरजीविता की जरूरतों को प्राथमिकता देते हैं। इसके अतिरिक्त, आदिवासी क्षेत्रों में आधारभूत संरचना की कमी भी एक बड़ी बाधा है। स्कूलों में आवश्यक सुविधाओं जैसे स्वच्छ पेयजल, शौचालय, प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालय का अभाव होता है। शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या भी एक चुनौती है, जिससे कक्षाएँ भीड़-भाड़ वाली हो जाती हैं और छात्रों को व्यक्तिगत ध्यान नहीं मिल पाता है, जो शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करता है।

जीवन कौशल विकास में सामाजिक समर्थन की कार्य-प्रक्रियाएँ

आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में सामाजिक समर्थन विविध कार्य-प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रभाव डालता है। सबसे पहले, प्रेरक-भावनात्मक केंद्र स्वीकृति, प्रशंसा और सुरक्षित वातावरण देकर संबद्धता और उद्देश्य बोध को बढ़ाती है, जिससे दृढ़ता, आत्म-नियमन और तनाव-प्रबंधन सशक्त होते हैं। दूसरा, संज्ञानात्मक-आदान-प्रदान शिक्षक व सहपाठियों के सहयोग, मातृभाषा और स्थानीय उदाहरणों से आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करता है। तीसरा, संसाधनात्मक आधारभूत समय, सामग्री, डिजिटल साधन और परामर्श के माध्यम से कौशल-अभ्यास के अवसर बढ़ाती है। चौथा, सांस्कृतिक-परिचायक परियोजनाएँ आत्म-गौरव व नेतृत्व को सुदृढ़ करती हैं। अंततः, रोल मॉडलिंग व नेटवर्किंग उद्यमिता और व्यावसायिक कौशल को विकसित करती हैं।

साहित्य का संक्षिप्त वर्णनात्मक अंश

अंतरराष्ट्रीय और भारतीय अध्ययनों का सामान्य निष्कर्ष है कि परिवार और स्कूल-आधारित जीवन कौशल कार्यक्रम, सहपाठी-समर्थित गतिविधियाँ (peer-led sessions), और समुदाय-समर्थित परियोजनाएँ सामाजिक-भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक कौशलों में सुधार लाती हैं; साथ ही स्कूल उपस्थिति, प्रेरणा और सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं। भारत में NCERT/UNICEF-समर्थित जीवन कौशल मॉड्यूल, बहुभाषी शिक्षण (मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा), और मडै जैसे आवासीय मॉडलों में परामर्श/मेंटोरिंग व खेल-आधारित गतिविधियाँ सकारात्मक संकेत देती हैं। ASER जैसी रिपोर्टें भी समुदाय-विद्यालय संपर्क के महत्व की ओर संकेत करती हैं विशेषतः महामारी के बाद सामुदायिक अध्ययन-समूह और स्थानीय स्वयं सेवकों की भूमिका उभरकर आई।

ध्यान दें: जनजातिय उपसमूह, क्षेत्रीय विविधता और स्थानीय नीतियों के कारण प्रभावों में विषमता देखी जाती है; इसलिए संदर्भ-विशिष्ट हस्तक्षेप और मूल्यांकन आवश्यक हैं।

भाषाई और सांस्कृतिक अवरोध

आदिवासी विद्यार्थियों के लिए एक और बड़ी चुनौती भाषाई और सांस्कृतिक अंतर है। अधिकांश जनजातिय बच्चे घर पर अपनी मूल भाषा बोलते हैं, जो प्रायः स्कूलों में शिक्षा का माध्यम नहीं होती है। यह भाषाई अंतर पाठ्यक्रम की समझ को कठिन बना देता है, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन खराब होता है और ड्रॉपआउट दर बढ़ती है। शिक्षक और बच्चे के बीच भाषा का यह अवरोध दोनों को एक-दूसरे को समझने से रोकता है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे अक्सर स्कूल छोड़ देते हैं।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक शिक्षा का ढाँचा अक्सर एक "वर्चस्ववादी संस्कृति और मानसिकता" पर आधारित होता है, जिसमें आदिवासी समाज कहीं फिट नहीं बैठता। इस व्यवस्था से तैयार आदिवासी बच्चे जब वापस अपने गाँवों में लौटते हैं, तो वे अक्सर अपने संसाधनों और शक्तियों से कटकर मानसिक गुलामी का शिकार हो जाते हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और आदिवासी संस्कृति के बीच का यह विरोधाभास छात्रों में अपनी पहचान खोने के डर को जन्म देता है। ये सभी कारक मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ शैक्षणिक सफलता के लिए एक मजबूत और बहुआयामी सामाजिक समर्थन प्रणाली अपरिहार्य हो जाती है।

जीवन कौशल विकास में सामाजिक समर्थन की भूमिका

आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास के लिए सामाजिक समर्थन एक महत्वपूर्ण आधारशिला का काम करता है। यह समर्थन केवल भावनात्मक सहारा प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक चुनौतियों के बीच एक सेतु का निर्माण करता है।

पारिवारिक समर्थन

परिवार वह प्राथमिक इकाई है जहाँ बच्चे अपने आत्म-सम्मान और पहचान को विकसित करते हैं। माता-पिता, पड़ोसियों और अन्य पारिवारिक सदस्यों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से एक बच्चे का Lo(self) आकार लेता है। यह विशेष रूप से तब और अधिक प्रभावी होता है जब घर और स्कूल में इस्तेमाल होने वाली भाषा और सांस्कृतिक प्रतीक समान हों। इस प्रकार, पारिवारिक समर्थन का दोहरा कार्य है। यह बच्चों को भावनात्मक और वैचारिक आधार प्रदान करता है, साथ ही उन्हें अपनी पारंपरिक भाषा और संस्कृति से जोड़े रखता है।

जीवन कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से परिवार में सकारात्मक बदलाव लाने का एक उल्लेखनीय उदाहरण सयली का है, जो एक आदिवासी बाहुल्य गाँव की रहने वाली है। उसने "किशोरी बालिका क्षमता विकास परियोजना" के तहत जीवन कौशल शिक्षा प्राप्त की और अपने घर में लिंग-आधारित भेदभाव का विरोध किया। उसके माता-पिता, जो पहले अपनी बेटियों की शिक्षा के प्रति उदासीन थे, ने उसकी कोशिशों के फलस्वरूप अपनी अन्य बेटियों को भी पढ़ाना शुरू कर दिया और उनके स्वास्थ्य एवं पोषण पर ध्यान देना प्रारंभ किया। यह उदाहरण दर्शाता है कि पारिवारिक समर्थन केवल एकतरफा नहीं होता; जब एक व्यक्ति जीवन कौशल से सशक्त होता है, तो वह पूरे परिवार की सोच और व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

सहकर्मी समूह (मित्र मंडली) का समर्थन

आदिवासी समुदायों में सामुहिकता और सामूहिक सहयोग की भावना अत्यंत प्रबल होती है। सहकर्मी समूह इस स्वाभाविक प्रवृत्ति को एक सकारात्मक शक्ति में बदल सकते हैं, खासकर शैक्षणिक और सामाजिक विकास के संदर्भ में। जनजातीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम जैसी पहलें इस बात का प्रमाण हैं, जो आदिवासी युवाओं को देश के अन्य हिस्सों के सहकर्मी समूहों के साथ भावनात्मक संबंध विकसित करने और उनके आत्म-सम्मान को बढ़ावा देने में सहायता करती हैं।

जीवन कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से सहकर्मी समर्थन के प्रभाव को ओडिशा की सागरिका राइका के उदाहरण से समझा जा सकता है। उन्होंने जीवन कौशल शिक्षा प्राप्त की और अपने माता-पिता द्वारा 16 साल की उम्र में तय किए गए बाल विवाह का विरोध करने में सफल रहीं। यह साहस उन्हें इसलिए मिला क्योंकि वे अपने

साथियों और एक गैर-लाभकारी संगठन के सहयोग से बाल विवाह जैसे सामाजिक दबावों के बारे में जागरूक और सशक्त हो चुकी थीं। यह घटना यह प्रदर्शित करती है कि सहकर्मी प्रभाव केवल अनुकूलन का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन का भी एक शक्तिशाली उत्प्रेरक हो सकता है। यह बच्चों को केवल चुनौतियों से निपटने में मदद नहीं करता, बल्कि उन्हें अपने जीवन और समाज को सकारात्मक रूप से बदलने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास और क्षमता भी प्रदान करता है।

शिक्षक और विद्यालय का समर्थन

शिक्षक, आदिवासी छात्रों के लिए केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं होते, बल्कि वे प्राथमिक मार्गदर्शक, परामर्शदाता और भावनात्मक समर्थन के स्रोत भी होते हैं। उनका शिक्षण अनुभव और नवाचारी दृष्टिकोण सीधे तौर पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

आश्रम शालाएँ और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) जैसे आवासीय विद्यालय दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन स्कूलों में बच्चों के साथ शिक्षक भी रहते हैं, जिससे एक सुरक्षित और सहायक वातावरण का निर्माण होता है। हाल ही में जनजातीय कार्य मंत्रालय और न्छम्ब द्वारा शुरू की गई शतलाश पहल एक सक्रिय समर्थन मॉडल का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पहल पारंपरिक शिक्षा से परे जाकर छात्रों के समग्र, मनोवैज्ञानिक और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके अंतर्गत, शिक्षकों को करियर परामर्श, जीवन कौशल और आत्म-सम्मान प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे छात्रों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकें। यह दृष्टिकोण केवल वित्तीय सहायता या आधारभूत संरचना प्रदान करने से आगे बढ़कर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करता है।

सरकारी और सामुदायिक समर्थन

सरकारी स्तर पर अनुसूचित जनजातियों के विकास के लिए कई योजनाएँ क्रियान्वित की गई हैं। इनमें मैट्रिक-पूर्व और पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाएँ शामिल हैं, जो छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करके ड्रॉपआउट दर को कम करने और उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने का लक्ष्य रखती हैं। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना (पीएमएएजीवाई) जैसे कार्यक्रम आदिवासी गाँवों में बुनियादी ढाँचे और सुविधाओं में सुधार पर केंद्रित हैं। इसके साथ ही, कुछ पहलें आदिवासी समुदाय की पारंपरिक समझ और ज्ञान को शैक्षिक प्रक्रिया में एकीकृत करने पर जोर देती हैं उदाहरण के लिए, शैक्षणिक कार्यक्रमों में हाट बाज़ार का दौरा करना, बागवानी और वर्मीकम्पोस्ट बनाने जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को प्रकृति, भूमि और स्थानीय अर्थव्यवस्था से जोड़ती हैं, जिससे उनके व्यावहारिक जीवन कौशल (जैसे सामूहिक कार्य और सामुदायिक संबंध) विकसित होते हैं। यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि आदिवासी छात्रों के लिए सामाजिक समर्थन को तभी प्रभावी माना जा सकता है जब वह उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान का सम्मान करता हो। आधुनिक शिक्षा प्रणाली और आदिवासी संस्कृति के बीच के विरोधाभास को दूर करने के लिए, पाठ्यक्रम को स्थानीय भाषाओं और परंपराओं के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास का सबसे मजबूत आधार उनके चारों ओर फैला सामाजिक समर्थन का व्यूह है— परिवार की स्वीकृति और प्रेरणा, शिक्षक का समावेशी मार्गदर्शन, सहपाठियों का सहयोग, समुदाय की सांस्कृतिक शक्ति, और संस्थागत/नीतिगत सहारा। जब ये सभी परतें आपस में समन्वित होकर कार्य करती हैं, तो विद्यार्थियों में आत्म-प्रभावकारिता, आत्मविश्वास, संबद्धता और अभ्यास-अवसर बढ़ जाते हैं। इस प्रकार वे न केवल शैक्षिक उपलब्धियों में बल्कि जीवन की व्यावहारिक चुनौतियों का सामना करने में भी सक्षम बनते हैं। संप्रेषण, सहयोग, समस्या-समाधान, नेतृत्व, सहानुभूति और आत्म-नियमन जैसे कौशलों का टिकाऊ विकास इसी सामूहिक प्रयास के परिणामस्वरूप संभव होता है। NEP 2020 की दिशा, जो बहुभाषिकता, कौशल-आधारित शिक्षा

और समुदाय—केन्द्रित सीख पर बल देती है, तथा मौजूदा कार्यक्रम जैसे एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, छात्रवृत्तियाँ और जीवन कौशल शिक्षा परियोजनाएँ इस लक्ष्य को और अधिक सुदृढ़ बना सकती हैं किन्तु इन कार्यक्रमों को तभी वास्तविक सफलता मिल सकती है जब भाषा—संवेदनशीलता, स्थानीय संदर्भ की उपयुक्तता और समुदाय—साझेदारी को केंद्र में रखा जाए। आगे का मार्ग मिश्रित—पद्धति अनुसंधान, अनुदैर्घ्य मूल्यांकन, और स्थानीय संसाधनों व सांस्कृतिक पूँजी पर आधारित सह—निर्माण से होकर गुजरता है। यही टिकाऊ, समावेशी और न्यायपूर्ण शिक्षा की वह कुंजी है जो आदिवासी विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक रूप से सक्षम बनाएगी बल्कि उन्हें सामाजिक और भावनात्मक रूप से भी सशक्त करेगी, ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना कर सकें और समाज के सक्रिय सहभागी बनें।

संदर्भ सूची

1. जैन, एस. (2021) भारत में हो आदिवासी समुदाय: भाषाई और साहित्यिक पहलू, *जर्नल ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन रिसर्च*, 6(1), 12014–12019।
2. भारत सरकार (2011) जनगणना 2011, भारत सरकार, गृह मंत्रालय।
3. सक्सेना, एन.सी. (2013) भारतीय जनजातियों की स्थिति पर रिपोर्ट, जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. विश्व स्वास्थ्य संगठन (1994) मानव स्वास्थ्य पर जीवन कौशल शिक्षा का प्रभाव, नई दिल्ली।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. कुमार, आर. एवं मिश्रा, एस. (2021) *आदिवासी विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में पारिवारिक और सामुदायिक सहयोग*, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
7. शर्मा, अ. (2020) आदिवासी शिक्षार्थियों के लिए शिक्षक समर्थन और समावेशी कक्षा प्रथाएँ, *भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, 39(1), 55–68।
8. वर्मा, र. एवं सिंह, प. (2019). आदिवासी विद्यार्थियों की शिक्षा और कौशल विकास में सामाजिक समर्थन की भूमिका, *जनजातीय शिक्षा अध्ययन पत्रिका*, 7 (2), 45–56।
9. ज़क्सा, व. (2018) *भारत में जनजातियाँ और शिक्षा*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली।
10. पटेल, म. (2022) आदिवासी युवाओं के लिए आईसीटी और डिजिटल समावेशन: अवसर और चुनौतियाँ, *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी पत्रिका*, 12(3), 101–115।
11. मीनू, रानी (2023) आदिवासी किशोरों में जीवन कौशल, (<https://www.researchgate.net/publication/370534377-LIFE-SKILLS-AMONG-TRIBAL-ADOLESCENTS>), Accessed on 12/06/2025.
12. रानी, एस., मोहन, एम. (2018) शिक्षकों के शिक्षण अनुभव और शिक्षण अभिवृत्ति के संबंध में सामाजिक विज्ञान में आदिवासी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स*, 6(1), 252–256, <https://ijcrt.org/papers/IJCRT1801319.pdf>, Accessed on 15/06/2025.
13. सिंह, ए.के. (2023) जनजातीय समुदाय का शैक्षिक विकास: एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य, *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च*, 10(10), 32.39।
14. ब्रॉफेनब्रेनर, यू. (1979) *The ecology of human development: Experiments by nature And design*, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स।

15. कोलमैन, जे. एस. (1988) Social capital in the creation of human capital, *अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी*, 94 (परिशिष्ट), S95–S120 ।
16. विश्व स्वास्थ्य संगठन (1997 / 2003) Life Skills Education for Children And Adolescents in Schools (Programme on Mental Health).
17. यूनिसेफ (विभिन्न वर्ष) Life Skills Education/Adolescent Development—Guidance notes And toolkits, यूनिसेफ, नई दिल्ली / जेनेवा ।
18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय ।
19. भारत सरकार (2019) सभी के लिए शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट 2018–19, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली ।
20. कुमार, आर (2017) *भारत में आदिवासी शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियाँ*, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
21. पांडा, एस. (2018) आदिवासी शिक्षा में भाषा संबंधी अवरोध, जनजातीय अनुसंधान केंद्र, रांची ।
22. यूनेस्को (2020) *वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट: समावेशन और शिक्षा*, यूनेस्को पब्लिशिंग, पेरिस ।
23. क्षत्रिय, वी. (2005) भाषा, धर्म और पहचान की राजनीति: भारत में जनजातियाँ, *इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 40(13), 1363–1370 ।

---==00==---